पर्जन्यसूक्त

ऋचा १

हे अर्चन-पूजन करने वालो, तुम शक्तिशाली पर्जन्यदेव का, वर्षा के परमदेव का स्तुति-गान करो और नमन करते हुए उन्हें मनाओ। अपनी प्रचण्ड गर्जना से आनन्दित हो, वे उदारतापूर्वक वर्षा कराते हैं। वे पर्जन्यदेव, जो शीघ्रता से अपना उपहार भेजते हैं, वनस्पतियों को उपजाऊ बनाएँ ताकि वे अंकुरित हों।

ऋचा २

पर्जन्यदेव में उसका नाश करने की शक्ति है जो इस पृथ्वी पर अनावश्यक है; उनमें राक्षसी शक्तियों का नाश करने की भी शक्ति है। समस्त सृष्टि उनके विलक्षण बल से भयभीत रहती है। जो भले हैं वे भी पीछे हट जाते हैं क्योंकि पर्जन्यदेव अपनी प्रचण्ड वायु से दुष्टों का नाश कर देते हैं।

ऋचा ३

जिस प्रकार एक रथी अपने अश्वों को हाँकने के लिए चाबुक का उपयोग करता है, उसी प्रकार पर्जन्यदेव अपनी गर्जना द्वारा, वर्षा को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। जब वे वर्षा से लदे, काले-घने बादलों से आकाश को आच्छादित कर देते हैं, तब दूर से ही ये बादल सिंह के समान गर्जना करते हैं।

ऋचा ४

जब पर्जन्यदेव मूसलाधार वर्षा के साथ आकाश से उतरते हैं तो तेज़ हवाएँ बहती हैं, बिजली चमकती है, नभ में प्रकाश बिखरने लगता है, नए पौधे तेज़ी-से बढ़ते हैं और सभी प्राणियों के लिए प्रचुरता से अन्न उपजता है। उनके आशीर्वाद से धरती नर्म हो जाती है और हल्की नमी से प्रसन्न हो उठती है; वह एक बार फिर यह महसूस करती है कि सम्पूर्ण जगत का हित करने के लिए वह उपजाऊ हो गई है।

ऋचा ५

हे पर्जन्यदेव, आपकी आज्ञा से पृथ्वी उपजाऊ बनी रहती है और समस्त प्राणियों को पोषण मिलता है। आपकी आज्ञा से पेड़-पौधे, जीवनदायिनी औषधि बनते हैं। हे देव, हमें अपनी शरण दें।

ऋचा ६

हे वायुदेव मरुत, जल से भरे मेघों को हमारी ओर भेजें ताकि आकाश से होने वाली मूसलाधार वर्षा हमारे लिए पोषण लेकर आए। कृपया गर्जन के साथ आएँ और अपना आरोग्यकर जल हम पर बरसाएँ। हे पर्जन्यदेव, आप हमारे दिव्य संरक्षक हैं, हमारे पोषणकर्ता व प्राण-शक्ति के प्रदाता हैं।

ऋचा ७

हे पर्जन्यदेव, गर्जना करें! पेड़-पौधों में जीवन-बीज का रोपण हो जाने दें! जल से भरे अपने रथ पर आसीन होकर आप हमारे चारों ओर उड़ें और अपने जल से भरे मेघों को मुक्त होकर, पहाड़ों और घाटियों पर समान रूप से बरसने दें।

ऋचा ८

हे पर्जन्यदेव, अपना विशाल पात्र उठाएँ और जल को नीचे उड़ेलते हुए मूसलाधार वर्षा करें! उन्मुक्त जलधाराएँ तीव्र वेग से बढ़कर, आकाश व पृथ्वी को जल से भर दें। सभी पशुओं को पीने के लिए निर्मल जल, प्रचुर मात्रा में मिले।

ऋचा ९

हे पर्जन्यदेव, जब आप गर्जन करते हुए, दुष्कर्मियों का नाश करते हैं तो पृथ्वी पर हर चीज़ और हर व्यक्ति, सभी आनन्द मनाते हैं!

ऋचा १०

हे पर्जन्यदेव, आपने प्रचुरता से वर्षा की है; अब इस वर्षा को रोक लें। आपने सूखी और मरुस्थल के समान धरती को स्वर्गिक स्थान बना दिया है। आपके आशीर्वाद से, प्रचुर मात्रा में आरोग्यकारी अन्न व औषधियाँ उपजी हैं। हे देव, आपने सच में हमारे प्रेम व पूजा को जीत लिया है।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह सूक्त ऋग्वेद के पाँचवें मण्डल, सूक्त ८३ से लिया गया है। इस सूक्त का अंग्रेज़ी भाषान्तर Stephanie W. Jamison and Joel P. Brereton [अनुवाद] की पुस्तक The Rigveda, The Earliest Religious Poetry of India [न्यूयॉर्क, न्यूयॉर्क : ऑक्सफ़ोर्ड यू. प्रेस, २०१४] के पृ. ७६५-६६, ऋग्वेद, ५.८३ पर आधारित है।